परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

30 मार्च। मेवाड़स्तरीय स्वागत समारोह एवं श्रावक सम्मेलन की सफल समायोजना के बाद परमपूज्य आचार्यप्रवर लाछुड़ा से साढ़े तेरह किमी.का विहार कर भगवानपुरा पधारे। बड़ी संख्या में भाई-बहिन पूज्यप्रवर के साथ विहार में संभागी बने। यहां आचार्यप्रवर का प्रवास राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। विहार के दौरान मध्यवर्ती केरिया गांव में ग्रामवासियों के अनुरोध पर कुछ समय के लिए रुके। यहां महावीर जैन भवन में आचार्यवर का स्वागत किया गया। मूल बीस जैन परिवारों वाले इस गांव में अभी सात घर खुले हैं। आचार्यप्रवर ने यहां के लोगों को अपना संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की 11वीं मासिक पुण्यतिथि

भगवानपुरा विद्यालय में उपस्थित ग्रमीणों, विद्यार्थियों और अध्यापकों को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति को संभाषण की शक्ति प्राप्त है, तभी वह बोलता है। संसार के अन्य प्राणियों में बोलने की शक्ति तो है, किन्तु परिष्कृत भाषा केवल मनुष्य के पास है। जिन्हें बोलने की शक्ति प्राप्त है, वे सत्यभाषी बनें। सत्य बोलें, किन्तु कटुसत्य न बोलें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की ग्यारहवीं मासिक पुण्यतिथि पर उनका स्मरण करते हुए आचार्यवर ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में सत्य की साधना थी। उन्होंने ज्ञानाराधना भी बहुत की। वे संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे, आशुकवि थे। उन्होंने ज्ञान के साथ-साथ ध्यान की भी साधना की।

लुहारिया में 'घणी-घणी खम्मा'

31 मार्च। आज प्रातः सात किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'लुहारिया' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। ठाकुर मणिराजसिंह के विनम्र अनुरोध पर आचार्यवर स्थानीय रावले में पधारे। ग्राम पंचायत की सरपंच श्रीमती सुलोचनाकंवर ने पूज्यवर की भावपूर्ण अगवानी की।स्वागत जुलूस में बड़ी संख्या में लोग सहभागी बने। चारों ओर 'घणी-घणी खम्मा' का निनाद गूंज रहा था। पूज्यवर के पदार्पण से गांववासियों की प्रसन्नता का पार नहीं था। युवकों का उत्साह दर्शनीय था। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी का उद्बोधन हुआ। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी की विचाराभिव्यक्ति के बाद साध्वी अतुलयशाजी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर की अभिवंदना की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्यवर के मेवाड पदार्पण से लोगों में उत्साह और उमंग है। सबको इस बात की आशा है कि आपसे कुछ नया प्राप्त होगा। यह एक संयोग है कि जब आचार्यश्री तुलसी ने मेवाड़ की यात्रा की थी, उस समय भी अमृत महोत्सव का प्रसंग था।वर्तमान में आचार्यवर की मेवाड. यात्रा के दौरान भी अमृत महोत्सव का प्रसंग है।लोगों में प्रसन्नता है,लेकिन बहुत जरूरी है कि यह प्रसन्नता कार्यकारी बने। आचार्यवर की यह मेवाड़ यात्रा इतिहास में एक नया अध्याय जोड़े।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा--'सम्यक ज्ञान, दर्शन, संयम व तप जैसे गुणों से संपन्न आत्मा साधु आत्मा होती है। साधु-संन्यासी त्यागी व साधनाशील होते हैं। गृहस्थ जीवन में भी साधना की जा सकती है। किन्तु साधु की साधना निर्मल होती है।'

क्षेत्र में हो रहे अपने संक्षिप्त प्रवास के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'कहीं भी जम कर काम किया जाए तो वह अधिक कार्यकारी होता है। लेकिन आचार्यों का एक दिन का प्रवास भी बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। लुहारिया ग्राम के लोग अपनी श्रद्धा और भक्तिभावना को कार्य रूप में परिणत करते हुए इस एक दिन के प्रवास का भी अच्छा लाभ उठा सकते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से मानव कल्याण का

भगीरथ प्रयत्न किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने उनके मिशन को आगे बढ़ाया। उन दोनों पूज्य गुरुओं के पदचिन्हों का अनुसरण हम कर रहे हैं।जनता में अहिंसा की भावना पुष्ट होती रहे, गुणवत्ता का विकास हो,यही हमारी यात्रा का उ-श्य है।

प्रवचन के पश्चात विद्यालय के प्रिंसिपल श्री हरखलाल सुथार एवं ठाकुर मणिराजसिंह ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। पूर्व पंचायत प्रधान श्रीमती विनोददेवी जैन, डा.रामप्रकाश चावला, श्री बाबूलाल टेलर, श्री गंगाराम बैरवा एवं श्री फजलुर्रहमान ने गांव की ओर से आचार्यप्रवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

रात्रि में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। पूज्यवर के संक्षिप्त उद्बोधन के पश्चात सभी श्रद्धालु परिवारों से परिचय का क्रम चला। सभी परिवार गुरुदेवश्री का निकट सान्निध्य एवं प्रेरणा प्राप्त कर भावविभोर थे।

अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान का रजतजयंती समारोह

1 अप्रेल।आज प्रातः लुहारिया ग्राम के अनेक घरों और तेरापंथ भवन को स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने विनयपुरम(बांकली)के लिए विहार किया। मध्यवर्ती चांखेड़ गोव में कुछ देर के लिए विराजना हुआ। पूज्यवर ने वहां के कतिपय घरों का स्पर्श किया और ग्रामवासियों के अनुरोध पर अपना संक्षिप्त उद्बोधन भी प्रदान किया। अणुव्रत की प्रवृत्तियों को गति प्रदान करने हेतु पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के निर्देश पर पचीस वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में चातुर्मास करने वाले मुनि सुखलालजी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सरपंच श्रीमती लहरीदेवी जाट ने आचार्यवर का स्वागत किया।

वहां से प्रस्थान कर आचार्यवर बांकली गांव स्थित स्व.बिहारीलालजी पारीक के आवास पर पधारे।परिवारजनों ने पूज्यवर को अपने द्वार पर पाकर अहोभाव की अनुभूति की। बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को पूज्यवर ने प्रेरक उपदेश दिया। अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। ग्रामीणों ने यात्रा के साथ चल रहे सेवार्थियों के वाहनों को मनुहारपूर्वक रोकर उनका आतिथ्य किया।

चांखेड़ और बांकली के संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद आचार्यप्रवर अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान द्वारा संचालित अणुव्रत महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पधारे। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के अमृत महोत्सव के समय मेवाड़ यात्रा के दौरान माण्डल के तत्कालीन विधायक स्व.बिहारीलाल पारीक के अनुरोध पर भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील के बांकली गांव से दो किमी. दूर सात बीघा भूखंड में 27 जून 1986 को अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान विनयपुरम की स्थापना हुई। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में संस्थापित इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य था बालिका शिक्षा,विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं व महिलाओं को शिक्षा व संस्कार देना। धीरे-धीरे प्राथमिक से उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में विकसित होता हुआ यह विद्यालय 1997 में सीनियर सेकेंड्री स्कूल के रूप में क्रमोन्नत हो गया। वर्तमान में कक्षा 6 से कक्षा 12 तक 270 बालिकाएं इसमें अध्ययनरत हैं। 46 गांवों से संस्थान की बसों में आने वाली इन छात्राओं के लिए शिक्षा के साथ निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें तथा यूनिफार्म आदि की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाती है। गत कई वर्षों से इस स्कूल का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहता है।

सन 2008 से संस्थान द्वारा अणुव्रत महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रारंभ हुआ, जिसमें लगभग सौ छात्राएं अध्ययनरत हैं। आचार्य तुलसी छात्रावास में आवास और भोजनशाला की समुचित व्यवस्था है।संस्थान की प्रगति में पूर्व जिलाधिकारी श्री कनकमल जैन व अन्य की सेवाएं प्राप्त होती रही हैं।संस्थान के संस्थापन एवं उन्नयन में मुनि सुखलालजी के पचीस वर्ष पूर्व चांखेड़ के चातुर्मास की उल्लेखनीय भूमिका रही। आज महिला शिक्षा के सशक्तीकरण के क्षेत्र में यह विद्यालय और महाविद्यालय अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

संस्थान के परिसर में आयोजित रजतजयंती समारोह के कार्यक्रम में स्वागताध्यक्ष श्री सोहनलालजी चोरड़िया ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। सचिव श्री प्रेमसिंह तलेसरा ने संस्थान की पचीस वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीलाल बाफना ने भावी योजनाओं को प्रस्तुति दी। सन् 1988 से इस संस्थान का अध्यक्षीय दायित्व संभाल रहे श्री बच्छराजजी सेठिया अस्वस्थता के कारण उपस्थित नहीं हो सके। उनकी ओर से श्री हंसराज सेठिया एवं श्रीमती पुष्पा बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।समारोह के मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री निर्मल एम.रांका,अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डा.महेन्द्र कर्णावट, श्री बी.सी.भलावत एवं कोषाध्यक्ष श्री रतनलाल खाब्या के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। 'अणुव्रती बनो' अभियान के अंतर्गत 2010-11 में संकल्पित हुए 2500 अणुव्रतियों के संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को भेंट किए गए। कलाविज्ञ श्री मूलचन्द अजमेरा(भीलवाड़ा) ने पूज्य आचार्यवर का आकर्षक चित्र भेंट किया। डा.प्रेमदान'भारतीय' ने अपनी कृति 'चेतन ज्योति आचार्य महाप्रज्ञ' पूज्य आचार्यवर को उपहृत की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भीलवाड़ा के जिलाधीश श्री ओकारसिंह ने अणुव्रत ग्राम भारती को ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अद्वितीय संस्थान बताते हुए इसे हर तरह का सहयोग देने की घोषणा की।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने कहा--'यह संस्थान अपने लक्ष्य के अनुरूप आगे बढ़ता रहे। मुनि सुखलालजी ने संस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए इससे जुड़े अनेक जीवनदानी कार्यकर्ताओं का उल्लेख किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी के वक्तव्य के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत को 'जीवनविज्ञान' के रूप में नया अवदान दिया। इससे शिक्षा के क्षेत्र में सकारातमक परिणाम आने लगे। जितने भी पुरुष शिक्षक हैं, उनकी पहली शिक्षिका तो मां ही है। यदि महिला समाज को शिक्षित नहीं किया गया तो बच्चों को शिक्षा और संस्कार कौन देगा ?'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'प्रत्येक व्यक्ति को विचारपूर्वक संभाषण करना चाहिए।भाषा का प्रयोग कहां कैसे करना है, इसका विवेक बहुत आवश्यक है। वाणी का संयम मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर ले जाता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज जंगल में मंगल हो रहा है। देखने में भी संस्थान अच्छा लग रहा है। संस्था को आगे बढ़ाने के लिए काम करना है तो दूसरे आकर्षणों को छोड़ना होता है। काम कहीं भी हो, वह निष्पत्तिमूलक होना चाहिए। इस संस्थान के संस्थापक बिहारलालजी पारीक के आवास पर गुरुदेवश्री तुलसी पधारे थे। आज मैं भी वहां गया। बिहारीलालजी का श्रम यहां बोल रहा है। इस संस्थान में महिला शिक्षा का उपक्रम चल रहा है। ग्रामीण बहनों का कोई पुण्य योग है कि उन्हें अपने क्षेत्र में ऐसा शिक्षा संस्थान मिला है।

बी.एड्.की छात्राओं की ओर उन्मुख होकर पूज्यप्रवर ने कहा--'शिक्षा के द्वारा परिवारों को संस्कारी बना सकें तो आप लोगों के द्वारा प्राप्त किया जा रहा प्रशिक्षण अधिक कार्यकारी हो सकता है। अणुव्रत के कार्यकर्ता अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाते हुए अच्छे कार्यों के लिए सदैव संकल्पित रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम के तत्काल बाद पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर जिलाधीश श्री ओकारसिंह ने नवनिर्मित 'महाप्रज्ञ प्रेक्षा हॉल' का लोकार्पण किया।

बावलास में 'बड़े बावजी' का पदार्पण

2 अप्रेल। आज प्रातः विहार से पूर्व अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान के विभिन्न भवनों का आचार्यवर ने अवलोकन किया। यहां से विहार कर आचार्यवर बावलास पहुंचे।वहां आपका प्रवास राजकीय प्राथमिक विद्यालय में रहा। विशाल व भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर ने विद्यालय परिसर में प्रवेश किया। इससे

पूर्व चांदरास गांव के श्रावकों और अन्य ग्रामीणों ने मुख्य मार्ग पर पहुंच कर आचार्यवर से जीवनोपयोगी प्रेरणा प्राप्त की। गांववासियों ने आगामी यात्रा में चांदरास पधारने का भावपूर्ण निवेदन किया।

बावलास के प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी एवं महाश्रमणीजी के प्रेरक संबोधन के पश्चात् परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इधर के छह गावों --बावलास, अड़सीपुरा, बोरियापुरा, बागोर, आमली, आशाहोली, इन छह गांवों का एक चोखला बनता है। इस चोखले में चतुर्मास का क्रम चलता है। प्रायः एक वर्ष में किसी एक गांव को चतुर्मास दिया जाता है। हमारे एक दिन के प्रवास को प्राप्त कर भी लोग कितने उल्लसित हो जाते हैं। दूर-दूर से आकर श्रावक अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं।'

बावलास में गणमान्य लोगों ने ग्राम की ओर से पूज्य आचार्यवर को अभिनंदन पत्र भेंट किया।

आशाहोली की आशा फली

3 अप्रेर्ल। बावलास के कतिपय घरों का स्पर्श कर श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने आशाहोली की ओर विहार किया। मध्यवर्ती बोरियापुरा और रेवाड़ा गांव के लोगों के अनुरोध पर आचार्यवर ने कम दूरी वाले कच्चे मार्ग को छोड़कर मुख्य सड़क से यात्रा स्वीकार की।बोरियापुरा के श्रावकों एवं अन्य ग्रामीणों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में लोगों को प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। बोरियापुरा से प्रस्थान कर आचार्यवर पूर्व शिक्षामंत्री स्व.रामपालजी उपाध्याय के गांव रेवाडा पधारे।पूज्यवर के स्वागत में ग्रामीणों ने पलक-पांवड़े बिछा दिए। गांव की सरपंच श्रीमती राजवनी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद़ार व्यक्त किए। स्व. रामपालजी के पुत्र श्रीनारयण उपाध्याय और ठाकुर नाथूसिंहजी ने भी पूज्यवर का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए स्वर्गीय रामपालजी का स्मरण किया। बोरियापुरा और रेवाड़ा के संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद पूज्यवर आशाहोली गांव पधारे। यहां आपका प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।आचार्यवर के आगमन से गांव का कण-कण पुलकित था। विशाल स्वागत जुलूस में आसपास के क्षेत्रों के सैकड़ों ग्रामीण संभगी बने।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री हस्तीमलजी सिंघवी के स्वागत भाषण के पश्चात सहाड़ा-रायपुर के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया तथा क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोगों के साथ उसे पूज्यवर को उपहृत किया।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी के प्राक् वक्तव्य के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'पूज्य आचार्यप्रवर का संदेश जीवन के अंधियारे में उजाला भरने वाला है। आशाहोली के लोगों को वि.सं.2067 का अंतिम दिन और 2068 का प्रातःकाल--इस दृष्टि से दो वर्ष का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है,यह उल्लेखनीय बात है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इन्द्रियों का संयम आवश्यक है। राग-द्वेष से मुक्ति की साधना तथा इन्द्रिय विजय की साधना अध्यात्म का केन्द्रीय तत्त्व है।इन्द्रियां बाह्य विषयों का अवबोध कराती हैं। ये ज्ञाता भी हैं और भोक्ता भी हैं। साधना के द्वारा हम इनके भोक्ता रूप को कमजोर करें।'

प्रकृति के प्रांगण में

4 अप्रेल, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा,वि.सं.2068 का प्रथम दिन। आशाहोली के अनेक घरों को स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने कोशीथल की ओर प्रस्थान किया। लगभग बारह किमी. की यह यात्रा प्रकृतिमय थी। ऊबड़-खाबड़ पथरीली और संकरी पगडंडियां तथा दोनों ओर से सघन कंटकाकीर्ण झाड़ियों से घिरी हुई थी। यत्र-तत्र आम,नीम,पीपल,बड़,ढाक, शीशम आदि के वृक्ष राहगीरों का ध्यान सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे। कहीं-कहीं खुले कुएं जागरूकता का संदेश दे रहे थे । सड़क के दोनों ओर खेतों

का लंबा सिलसिला,जिसमें गेहूं की पकी फसल की कटाई कर रहे उद्यमी किसान पूज्यवर के दर्शनों के लिए दौड़कर आए और पूज्य चरणों का स्पर्श कर धन्यता का अनुभव किया।। लम्बे घूंघट वाली ग्रामीण महिलाएं उत्सुक भाव से अहिंसा यात्रा को निहार रहीं थीं और करबद्ध होकर पूज्यवर को अपनी श्रद्धा समर्पित कर रही थीं। गाय,भैंस,ऊंट और भेड़-बकरियों के रेवड़ तथा उन्हें नियंत्रित करते चरवाहे गांव की पूरी झांकी प्रस्तुत कर रहे थे। इन दृश्यों को देखकर मन बरबस ही कह उठता--सचमुच भारत गांवों में ही बसता है।

मध्यवर्ती बकाण गाव में पूर्व सरपंच अमरसिंहजी के आवास पर पूज्य आचार्यवर का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। अनेक ग्रामीणों ने पूज्यवर की प्रेरणा से नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया। तत्काल तोड़कर फेंके गए बीडी के बंडल उनके दृढ़ संकल्प की पुष्टि कर रहे थे। वहां से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर ने दियास गांव में विद्यार्थियों को नशे की प्रवृत्ति से दूर रहने की प्रेरणा दी।कोशीथल के अनेक घरों और स्थानक का स्पर्श करते हुए आचार्यवर यहां के प्रेम सज्जन साधना संस्थान में पधारे।

राजकीय विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में कालेज के व्याख्याता श्री ओमप्रकाश भाटिया ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'आचार्यश्री कोशीथल को काशी बनाने आए हैं।'स्थानीय जैन श्रावक श्री लादूलाल मेहता ने स्थानकवासी श्रमण संघ के महामंत्री सौभाग्यमुनि'कुमुद' द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया। गांव के वरिष्ठ लोगों ने प्रेम सज्जन साधना संस्थान की ओर से आचार्यवर को अभिनंदन पत्र भेंट किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने 'भोप दीप सुख सामजी,भिक्खू सिख बड़वीर' पद्य का उल्लेख करते हुए कहा--मुनि भोपजी तेरापंथ के विशिष्ट तपस्वी संत थे। कोशीथल को उनकी जन्मभूमि होने का गौरव मिला। वि.सं.1864 के लावासरदारगढ़ चातुर्मास में उन्होंने मात्र सत्रह दिन भोजन किया था। उनका नाम मंत्राक्षर रूप में लिया जाता है।' महाश्रमणीजी ने सबको संयम की चेतना जगाने की प्रेरणा दी।

पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'विक्रम संवत के क्रम में आज नववर्ष का प्रारंभ हुआ है। इस अवसर पर सब अतीत की आलोचना करें तथा आगे के लिए शुभ संकल्प करें।' आचार्यवर ने आगे कहा--'कोशीथल का जैन समाज बड़ा है। वैसे हमारा यहां आने का कार्यक्रम नहीं था,पर लोगों की भावना देखकर मेरा मन बना और मैं यहां आ गया।स्थानकवासी समुदाय के सौभाग्यमुनि के साथ पूर्व में हमारा कार्यक्रम हुआ था। वे एक चिंतनशील संत हैं।उनके द्वारा प्रेषित संदेश सद्भावना का प्रतीक है।समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो,सबके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार रहे,मनुष्य-मनुष्य से घृणा न करे,जैन श्रावक बारह व्रतों को धारण करें।' कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा भीलवाड़ा द्वारा संचालित अणुव्रत साधना सदन विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा भरे गए अणुव्रत संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए गए।

देवरिया में आचार्यवर का भव्य स्वागत

5 अप्रेल। आज प्रातः 5 किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर देवरिया गांव में पधारे। मार्ग के मध्य में देवरिया चौराहे पर गंगापुर के श्रावकों ने आचार्यवर की अभिवंदना की और यथासमय गंगापुर पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया। पूज्यवर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा--'गंगापुर महामना कालूगणी की पुण्यभूमि और पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की तिलकभूमि है। कुछ वर्षों पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ वहां पधारे थे और रंगमहल के उन ऐतिहासिक स्थलों को हमें दिखाया था। गंगापुर के श्रावकों में धार्मिक उत्साह बना रहे।' वहां से प्रस्थान कर आचार्यवर मानपुरा खेड़ा पधारे और स्वागत के लिए उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

पूज्यवर ने देवरिया गांव में प्रवास स्थल पर पहुंचने से पूर्व अनेक घरों का स्पर्श भी किया। तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मंत्रीमुनि और मुख्य नियोजिकाजी के विशेष वक्तव्य हुए।मुनि

यशवंतकुमारजी ने अपने दीक्षा दिवस पर अपने दीक्षा प्रदाता से मंगल आशीर्वाद की कामना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने वक्तव्य में जन सामान्य को उद्बुद्ध करने हेतु पूज्य आचार्यवर द्वारा किए जा रहे श्रम को सार्थक बनाने की प्रेरणा दी।

आचार्यवर के स्वागत में विशेष रूप से उपस्थित कथावाचक दिलीपदासजी त्यागी ने कहा--'मेरा सौभाग्य है कि मैं इस यात्रा में संभागी बना। मैं यहां बोलने नहीं, आचार्यश्री को सुनने और आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त करने आया हूं। आचार्यवर ऐसा आशीर्वाद दें कि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी अनेक प्रकार से दृष्टिहीन हो सकता है।कुछ लोग जन्मान्ध होते हैं तो कुछ कामान्ध। कुछ लोग मदान्ध भी होते हैं। अपेक्षा है हर व्यक्ति अपने अहंकार को विगलित करने का प्रयास करे।' आचार्यवर ने आगे कहा--'इन वर्षों में मैं तीसरी बार देवरिया आया हूं। इससे पूर्व सन् 2004 में आचार्यवर के निर्देशानुसार पृथक रूप में यहां आया था और उसके बाद सन् 2007 में पृथक विहार कर यहां आचार्यवर के दर्शन किए थे।देवरिया का अपना इतिहास है।मुनि उगमराजजी जैसे तपस्वी संत यहीं के थे। वर्तमान में मुनि शान्तिप्रियजी भी यहीं के हैं। यहां अनेक समर्पित श्रावक भी हुए हैं।मैंने लोगों की भक्तिभावना के कारण ही रात्रिवास भी यहीं करने का निर्णय लिया। मुनि यशवंतकुमारजी को ग्यारह वर्ष पूर्व मैंने आचार्यश्री के निर्देश पर दीक्षित किया था। ये अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए धर्मसंघ की सेवा करते रहें,अच्छा काम करते रहें।'